Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

हिमाचल प्रदेश के सोलन क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत गायन के प्रति संवेदना संवर्धन कर रहे प्रमुख संगीतज्ञ

MANJUL KUMAR[1] & DR.RAJEEV SHARMA[2]

Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

Assistant Professor, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

शास्त्रीय संगीत भारत देश की अमूल्य संस्कृति की पहचान है, जिसका समय के बदलाव के साथ-साथ एकाएक विकास होता आ रहा है। जहाँ एक ओर तानसेन तथा बैजूबावरा जैसे महान संगीतज्ञों का उल्लेख होता था तो आज के समय में पंडित भीमसेन जोशी तथा पंडित जसराज जी जैसे महान शास्त्रीय संगीतज्ञों को याद किया जाता है जिन्होंने शास्त्रीय संगीत को आम जनमानस तक पहुँचाने में अपना अहम योगदान निभाया। इन सभी गुणीजनों से प्रेरणा लेकर शास्त्रीय संगीत आज भारत के कोने-कोने में सिखाया जाने लगा है तथा भारत के बहुत से स्कूलों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा निजी शिक्षण संस्थानों में विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा है। हिमाचल प्रदेश का सोलन क्षेत्र भी इस ही दिशा की और अग्रसर है जहाँ महाविद्यालयों तथा निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा शास्त्रीय संगीत के संवर्धन हेतु अनेकों प्रयास किये जा रहे हैं।

उद्देश्य: इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के ज़िला सोलन क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत गायन के प्रति संवेदना संवर्धन हेतु विभिन्न प्रयासों को जानना है।

बीज शब्द: शास्त्रीय संगीत, संवेदना, संवर्धन

सोलन

देव भूमि हिमाचल प्रदेश का सोलन क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सौंदर्यता तथा पर्यटन के लिए विष्वविख्यात है। यह हिमाचल पदेश के दक्षिण में स्थित है। यहाँ का करोल पर्वत, काली का टिब्बा, बाड़ी की धार, अर्की में स्थित लुटरू महादेव, चायल, जुन्गा एवं कसौली की सुंदर पहाड़ियाँ सैलानियों के मन में उत्साह व उमंग का माहौल उत्पन्न कर देती हैं। प्राकृतिक सौन्दर्यता के अलावा सोलन क्षेत्र का लोक संगीत के साथ गहरा नाता है। यहाँ के लोक गीत बरबस ही श्रोताओं का मन मोह लेते हैं।

शास्त्रीय संगीत

शास्त्रीय नियमों पर आधारित संगीत शास्त्रीय संगीत कहलाता है। भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत को सर्वोपरि माना गया है। इसके अंतर्गत गायन, वादन तथा नृत्य आदि के प्रस्तुतीकरण के समय निश्चित नियमों की पालना करना अनिवार्य है। जिस तरह भारतीय समाज में किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पहले देवी-देवताओं का स्मरण किया जाता है, उस ही प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत की गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत गुरु को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। संस्कृत के एक श्लोक में लिखा है:

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः

गुरूरसाक्षात परब्रह्मा , तस्मै श्री गुरुवे नमः

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अर्थात भारतवर्ष में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान प्राप्त हुआ है। शास्त्रीय संगीत का विकास भी गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत ही हुआ है। इस परंपरा के अंतर्गत एक गुरु अपने शिष्यों को संगीत सिखाता है तथा वही शिष्य इसी संगीत को आगे बढ़ाते हुए अन्य शिष्यों को संगीत शिक्षा प्रदान करते हैं।

शास्त्रीय संगीत का सामान्य परिचय

शास्त्र पर आधारित संगीत को शास्त्रीय संगीत कहा जाता है। अंग्रेज़ी में शास्त्र को विज्ञान के नाम से भी जाना जाता है, अर्थात किसी भी विषय से संबंधित सुव्यवस्थित ढंग से लिखा गया ज्ञान,दसिद्धांत तथा नियम शास्त्र कहलाता है। इसी प्रकार शास्त्रीय संगीत से अभिप्रायः ऐसे संगीत से है जिसमें संगीत के विद्वानों द्वारा बनाए गए शास्त्रीय नियमों की पालना करना अनिवार्य है। शास्त्रीय संगीत एक ऐसा संगीत है जिस के अंतर्गत गायन, वादन तथा नृत्य के कुछ निर्धारित नियम व सिद्धांत होते हैं। उदाहरणार्थ: हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायन शैली 'ख्याल' में एक ओर जहां राग के नियमों (स्वरों का सही लगाव, तानो के प्रकार) का विशेष ध्यान रखा जाता है, वहीं दूसरी ओर ताल के नियमों (सम, तिहाई, लयकारियाँ) का भी विशेष रूप से पालन करते हुए गायन , वादन या नृत्य किया जाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के 2 पक्ष माने गए हैं:

1. शास्त्र अथवा सैद्धांतिक पक्ष

2. क्रियात्मक एवं व्यवहारिक पक्ष

1. शास्त्र पक्ष

शास्त्र पक्ष लिखित रूप में होता है तथा इस पक्ष के अंतर्गत शास्त्रीय संगीत के मूल नियम व सिद्धांत आते हैं। शास्त्र पक्ष में शास्त्रीय संगीत के सभी पारिभाषिक शब्द तथा संगीत शास्त्र सम्बन्धी तथ्य आते हैं। इन के अतिरिक्त शास्त्र पक्ष में संगीत का इतिहास, संगीतज्ञों का परिचय सम्बन्धी अध्ययन भी आता है।

शास्त्र पक्ष के 2 प्रकार हैं

क) क्रियात्मक शास्त्र

ख) शुद्ध शास्त्र

क) क्रियात्मक शास्त्र

इस शास्त्र के अंतर्गत क्रियात्मक संगीत के शास्त्र का अध्ययन आता है। इस शास्त्र में रागों का परिचय, स्वरलिपि, ताल-अलाप, रागों की तुलना, तालों का परिचय आदि का लिखित रूप में अध्ययन पाया जाता है। क्रियात्मक पक्ष की समझ को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए इस शास्त्र का ज्ञान होना अनिवार्य है। क्रियात्मक शास्त्र के ज्ञान के अभाव में एक सर्वगुण संपन्न संगीतज्ञ बनना संभव नहीं।

ख) शुद्ध शास्त्र

क्रियात्मक शास्त्र में एक ओर जहां क्रियात्मक शास्त्र के संगीत का वर्णन पाया जाता है, तो वहीं दूसरी ओर शुद्ध शास्त्र के अंतर्गत संगीत, संगीत की उत्पत्ति, इतिहास, पारिभाषिक शब्दावली जैसे ताल, लय, मात्रा, ताली, खाली, मींड, गमक, खटका तथा मुरकी आदि की परिभाषा का अध्ययन आता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

2. क्रियात्मक पक्ष

क्रियात्मकता से अभिप्रायः व्यावहारिक, अभ्यास सिद्ध, क्रियात्मक तथा प्रयोगात्मक रूप से है। अर्थात संगीत के क्रियात्मक पक्ष को हम प्रत्यक्ष रूप में देखते, सुनते तथा गाते एवं बजाते हैं। गायन, वादन तथा नृत्य की प्रस्तुति करने से पूर्व कलाकार अपने वाद्यों को सुर में मिलाते हैं।

संगीत के इस पक्ष में साधना का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पक्ष के अंतर्गत रागों का गायन-वादन, गीत के प्रकार, ध्वनि का उतार-चढ़ाव, नृत्य आदि प्रत्यक्ष रूप से कलाकारों द्वारा किये जाते हैं। क्यूंकि कला का मुख्य उद्देश्य उसकी अभिव्यक्ति करना है तथा विशेषकर संगीत कला का प्रत्यक्ष रूप में ही प्रस्तुतीकरण होता है, इसलिए हिंदुस्तानी संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य की शैलियों का क्षेत्र बहुत व्यापक है इसी कारण क्रियात्मक पक्ष को भारतीय संगीत में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। जब तक कोई कला साधक अपनी कला की समुचित साधन नहीं करेगा तब तक वह अपने दर्शकों एवं श्रोताओं के मन पर प्रभाव नहीं डाल सकता।

संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्रीय पक्ष दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक संगीतकार के लिए इन दोनों पक्षों में पूर्ण दक्ष होना अनिवार्य माना जाता है। उदाहरणार्थ यदि कोई गायक, वादक या नर्तक किसी मंच पर अपनी विधा का प्रदर्शन कर रहा है परन्तु यदि उसे अपनी उस विधा के शास्त्र अथवा लिखित पक्ष का ज्ञान नहीं है तो स्वाभाविक रूप से उस की प्रस्तुति अधिक प्रभावशाली नहीं होगी।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अनेक विधाएँ आज भारत ही नहीं अपितु विश्व में प्रचलित हैं। इन में ख्या , तराना, ध्रुपद, धमार तथा उप शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत ठुमरी, दादरा, कजरी, होरी आदि सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। श्रृंगार, भक्ति, वीर, वीभत्स, शांत, भयानक तथा करुण आदि रसों के समावेश से कलाकार अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति अपने गायन, वादन तथा नृत्य के माध्यम से करते हैं।

संवेदना

मानव का मन विभिन्न प्रकार के भावों से भरा है। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में मानव अनेक प्रकार के भावों को अपने मन के अंदर अनुभव करता है। हँसी, ख़ुशी, जोश, गुस्सा, ईर्ष्या, प्रेम आदि हमारे मन के भाव हैं। संवेदना हमारे मन का ही एक भाव है जो हमें किसी दूसरे को कष्ट में देख कर वेदना का आभास करवाता है। संवेदना 2 प्रकार की होती है। आंतरिक तथा बाह्य संवेदना। बाह्य संवेदना का संबंध हमारे शरीर पर बाहरी रूप से होने वाली वेदना से है, जबकि आंतरिक संवेदना हमारे मन के भीतर उत्पन्न होती है। मानव एक संवेदनशील प्राणी है तथा मनुष्य के अंदर संवेदना अनेकों रूप से अर्थात राष्ट्र, राजनीति, वन्य प्राणी, कलाएँ, परिवार, समाज, परिचित, अपरिचित आदि के प्रति पैदा हो सकती हैं।

संवेदना का अर्थ एवं परिभाषा

संवेदना के अर्थ को जानने से पहले इसकी शाब्दिक व्युत्पति के बारे में जानकारी होना अनिवार्य है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से संवेदना की उत्पत्ति 'विद' धातु में 'यु' प्रत्यय जोड़ने तथा 'यु' के स्थान पर 'अन' आदेश हो जाने और फिर 'ई' को गुण करने से 'वेदन' शब्द की व्युत्पत्ति हुई। इसके उपरांत स्त्रीलिंग में 'टाप' प्रत्यय जुड़ने पर वेदना शब्द बना।

वेदना का अर्थ सामान्यतः दुःख कष्ट तथा पीड़ा इत्यादि माना जाता है। अंग्रेज़ी में संवेदना के कई पर्यायवाची माने गए हैं। अंग्रेज़ी भाषा में संवेदना के लिए सिम्पेथी अर्थात संवेदना, सहानुभूति, सेंसिटिविटी अर्थात संवेदना, महसूस करना,

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भावुक हो जाना, एमोटीविटी अर्थात संवेदना, भावुक भावना, संवेगात्मकता आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। यदि हमारे दांत या कान में वेदना अर्थात पीड़ा है तो हमें यह वेदना उसके कारण का आभास करवाती है। जैसे दाँत के दर्द में दांत के सिवाए कुछ नहीं दिखता। वेदना से पहले दांत का अभाव या भान नहीं होता है। इसका मतलब हुआ वेदना की अनुभूति करवाना।

'मानक हिंदी कोष' में "मन में होने वाला अनुभव या बोध, अनुभूति, किसी को कष्ट में देख कर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना, उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव इत्यादि संवेदना के अर्थ बताए गए हैं। "

'हंसराज भाटिया' के अनुसार - "संवेदना ऐसी सरलतम मानसिक प्रक्रिया है जो विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से आविर्भूत होती है, ये संवेदनाएं शारीरिक और मानसिक दोनों हैं। संवेदना ज्ञानात्मक संबंध का सर्वप्रथम और सरलतम रूप है।"

'शब्दार्थ दर्शन' के अनुसार - "संवेदना का मुख्य अर्थ अनुभूति, ज्ञान या विदित होना अर्थात शरीर तथा मन में किसी प्रकार की वेदना होना संवेदन या संवेदना है, परन्तु हिंदी में प्रायः सहानुभूति के पर्याय के रूप में प्रचलित है।"

साहित्य, संगीत तथा अन्य कलाओं में संवेदना को आंतरिक भावना के रूप में समझा जाता है, जिसे 'डॉ० नगेंद्र ' ने संवेदना पर कही अपनी परिभाषा में उद्धृत किया है।' डॉ० नगेन्द्र' के अनुसार- "साहित्य में संवेदना का प्रयोग स्नायविक संवेदनाओं की अपेक्षा मनोगत संवेदनाओं के लिए अधिक होता है।

इन सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संवेदना हमारे मन का एक ऐसा भाव है जो सर्वप्रथम हमारी इन्द्रियों द्वारा किसी व्यक्ति, विषय, वस्तु, प्राणी के प्रति गहन सहानुभूति की भावना उत्पन्न करता है। संवेदना का भाव एक बौद्धिक एवं मानसिक प्रक्रिया है। यदि कलाओं के साथ संवेदना का सम्बन्ध जोड़ा जाए तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं हो सकती कि किसी भी कला के प्रति श्रद्धा, समर्पित्तता, सहानुभूति तथा समर्पण उन कलाओं के प्रति संवेदना कही जा सकती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा संवेदना का आपस में गहरा संबंध है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक इसलिए हैं क्योंकि शास्त्रीय संगीत रस प्रधान संगीत है तथा संवेदना के बिना इन रसों की उत्पत्ति होना संभव नहीं। शृंगार, वियोग, अद्भुत, रौद्र तथा वीर जैसे रसों को वही कलाकार अपने गायन, वादन या नृत्य में अभिव्यक्त कर पायेगा जो उक्त रसों के अनुकूल संवेदनशील होगा। अन्यथा संवेदना के बिना उस कलाकार की प्रस्तुति में रस नहीं होगा बल्कि वह प्रस्तुति मात्र खानापूर्ती बन कर रह जाएगी। भारतवर्ष की प्राचीनतम स्थानीय परंपराएं तथा विचार अपने आप में समाए हुए शास्त्रीय संगीत भारतीय समाज में निहित संवेदनाओं का प्रस्तुतीकरण दर्शकों एवं श्रोताओं के सम्मुख करता है।

हिमाचल प्रदेश के सोलन क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत गायन के प्रति संवेदना संवर्धन कर रहे प्रमुख संगीतज्ञ

01 श्री सीता राम शर्मा

हिमाचल प्रदेश के ज़िला सोलन में स्थित बगेटू गाँव से सम्बन्ध रखने वाले 50 वर्षीय श्री सीता राम शर्मा जी की बचपन से ही संगीत में रूचि थी। इन के माता-पिता जी का संगीत की ओर बड़ा रुझान था। इन के घर पर प्रत्येक शुभ कार्य में कीर्तन का आयोजन होता रहता था। आगे चल कर इन्होने एक जागरण पार्टी बनाई तथा 1987-88 से ये हिमाचल के

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

विख्यात गायक तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय संगीत विभाग से सेवानिवृत प्रोफेसर राम स्वरुप शांडिल जी के पास विधिवत रूप से संगीत सीखने के लिए चले गए। इन्होने 5 से 6 बार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय की तरफ से आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया है , साथ ही इन्होने बहुत से कार्यक्रमों में शास्त्रीय संगीत गायन भी किया तथा कई बार प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। इनके अलावा ये आकाशवाणी से सुगम संगीत तथा लोक संगीत में 'बी हाई ग्रेड' स्तर के कलाकार हैं। कई संस्थाओं द्वारा इन्हें शास्त्रीय संगीत गायन के लिए सम्मानित भी किया गया है, जिन में संस्कार भारती नामक संस्था प्रमुख है।

श्री सीता राम शर्मा 2001 से लेकर वर्तमान में सोलन शहर में निजी तौर पर बच्चों को शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत की शिक्षा दे रहे हैं। ये मुख्य रूप से शास्त्रीय गायन तथा इस के पश्चात् लोक संगीत गायन, भजन गायन, तबला वादन, हारमोनियम वादन सिखाते हैं। इनके अलावा कनिष्ठ वर्ग में स्कूली बच्चों को समूह गान तथा लोक नृत्य की शिक्षा भी निजी रूप से देते हैं। ये युवा कार्यक्रम तथा खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित युवा समारोहों तथा महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालयों के युवा समारोहों के लिए भी निजी तौर पर बच्चों को सिखाते हैं। इनका कहना है कि "एक अच्छा संगीतकार बनने के लिए अनिवार्य रूप से शास्त्रीय संगीत गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत सीखना चाहिए। आज के समय में भारतवर्ष में बहुत से गुणी लोग शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दे रहे हैं। 6-7 साल अथवा 10 साल की उम्र से यदि बच्चा सही गुरु का चयन कर के संगीत सीखता है तो ही बात बनेगी। मैं यह समझता हूँ कि हम सही गुरु के बिना अथवा सही शिक्षा के बिना हम सही संगीतकार नहीं बन सकते।"

2008 से सीता राम शर्मा एक संगीत संस्था चला रहे हैं, जिसका नाम है गुरु शिष्य परंपरा एवं शास्त्रीय संगीत संस्था सोलन। ये लगभग 12 वर्षों से इस संस्था के अध्यक्ष हैं। पहले यह ज़िला स्तरीय संस्था थी, सन 2019 से यह राज्य संस्था सस्न्था बन गयी है। यह प्रतिवर्ष सोलन शहर में शास्त्रीय संगीत पर आधारित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं तथा सम्मेलनों का आयोजन भी करवाते हैं, जिनके लिए लगभग 2008 से बच्चों को शास्त्रीय गायन, भजन गायन, तबला वादन तथा हारमोनियम वादन तैयार करवा रहे हैं। आज बच्चे राष्ट्रीय स्तर तक भी इन विधाओं में आगे पहुँच रहे हैं। इस सभी से बच्चों में एक अच्छा सन्देश यह जाता है कि वह इस तरह के आयोजनों में अन्य बच्चों की प्रतुतियाँ सुन कर स्वयं भी सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। श्री सीता राम बच्चों के लिए सीखने हेतु भी नाना प्रकार के आयोजन करवाते हैं तथा भारत के विख्यात कलाकारों के गायन अथवा वादन की प्रस्तुतियां भी करवाते हैं। जिनमें कनिष्ठ श्रेणी के अंतर्गत प्रमुख हैं बांसुरी वादक पंडित चेत राम जी के पोते नवकांत शर्मा, जो कई बार इस कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां दे चुके हैं, इन के अलावा पिछले 3-4 वर्षों से इन की दोनों बेटियां मेधा शर्मा, शिवानी शर्मा भी इस कार्यक्रम में प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। इनके अलावा इन के गुरु भाई या विद्यार्थी भी इस कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां दे कर जाते हैं। इसके साथ-साथ "संगीत छात्र कल्याण संगठन-हिमाचल प्रदेश "नामक संस्था के अंतर्गत ज़िला सोलन के अध्यक्ष भी बनाए गए हैं। यह संस्था भी कई वर्षों से संगीत के प्रति अपनी वेदनाओं को सरकार तक पहुंचा रही है।

संवेदना तथा शास्त्रीय संगीत के मध्य सम्बन्ध बताते हुए श्री सीता राम शर्मा का कहना है कि "यदि हम शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत किसी राग का सही समय पर, सही तरीके से रियाज़ करते हैं तो उससे शरीर में एक अलग भावना पैदा होती है और वह तभी आती है जब हम शास्त्रीय संगीत के प्रति संवेदनशील हैं। यदि आप संवेदनशील नहीं हैं तो वह भावना नहीं आएगी। जिसे हम अपनी भाषा में कहते हैं "रौंगटे खड़े होना" जब कोई अच्छा गायन अथवा वादन करता है तो जो

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अच्छे श्रोता होते हैं, उन के रौंगटे खड़े होते हैं। कई बार अश्रुओं की धारा भी बहनी शुरू हो जाती है। शास्त्रीय संगीत आज ही नहीं, सैंकड़ों वर्षों से संवेदनशील है, जैसे मेघ राग से बारिश होना, दीपक राग से अग्नि पैदा होना। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है और यह संवेदना का ही काम है। यदि हम शास्त्रीय संगीत के प्रति संवेदनशील नहीं हैं तो हम ऐसा करतब नहीं कर सकते या किसी के मन में संवेदना जागृत नहीं कर सकते।"

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के उत्थान हेतु श्री सीता राम शर्मा जी का कहना है कि "हिमाचल प्रदेश सरकार संगीत को प्राथमिकता के तौर पर प्राथमिक स्तर से ले कर कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर तक विषय रूप में पढ़ाने की अनुमति दें। साथ ही संगीत के जो अच्छे शिष्य हैं वो 5, 6 या 10 सालों तक इस विषय के लिए सरकार की सहायता करें, जिससे अच्छा संगीत सुनने को मिलेगा। इसमें उम्र भी ना देखी जाए। चाहे कोई अच्छा सेवा निवृत संगीत अध्यापक हो, उन्हें भी स्कूल, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में संगीत विषय पढ़ाने की अनुमति प्रदान की जाए , साथ ही उन्हें सम्मानजनक मानदेय भी मिले ताकि शास्त्रीय संगीत जीवित रह सके और इसके संस्कार भी बने रहें।" पिछले 10-12 वर्षों से भी हम अपनी संस्था के अंतर्गत सरकार के पास यह मांग ले कर जा रहे हैं कि स्कूलों में भी संगीत को विषय के रूप में पढ़ाया जाए। जिस तरह कला, योग, अंग्रेजी, विज्ञान तथा हिंदी विषय हैं , उसी तरह संगीत की भी एक कक्षा हो, संगीत का भी एक अध्यापक हो और स्कूलों में सुबह जो प्रार्थना हो वह हमें सुव्यवस्थित ढंग से सुनने को मिले।"

02 **श्री जियालाल ठाकुर**

58 वर्ष के श्री जियालाल ठाकुर ज़िला सोलन के बघाट क्षेत्र के काबां कलाँ नामक गाँव के रहने वाले हैं , जो वर्तमान में ज़िला सोलन में स्थित नौणी विश्विद्यालय में कार्यरत हैं तथा सोलन के कायलर नामक स्थान पर इनका "रीयल मिक्स " नाम से डिजिटल ऑडियो रिकॉर्डिंग स्टूडियो भी है, जिसमें बहुत से लोग अपने गीत रिकॉर्ड करवाने तथा शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत सीखने हेतु आते हैं। साथ ही ये सरगम कला मंच नामक संस्था भी चला रहे हैं, जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां करवाई जाती हैं। इन्होने वैदिक तालों पर शोध किया है तथा लोक नाट्य करियाला के प्रचार व प्रसार हेतु अनेकों कार्य किये हैं। इन के स्टुडिओ में बहुत से बच्चे इन से संगीत सीखने आते हैं। इन्होंने 7 से 8 साल के बच्चों को वैदिक शैली के ताल छट्टी (छड़ी) व ढोल वादन के साथ गायन करना सिखाया है। इन बच्चों ने कई बड़े मंचों पर प्रस्तुतियां भी दी हैं। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय गान तथा सारे जहाँ से अच्छा नामक गीतों को छन्द शास्त्र पर आधारित वैदिक शैली के ताल वाद्यों के साथ रिकॉर्ड करने के लिए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ऐ० पी० जे० अब्दुल कलाम जी से पुरस्कार भी मिला है। इन्होंने दोनों राष्ट्रीय रचनाओं तथा क्रांति गीत को वीर रास के वैदिक शैली वाले वाद्यों के साथ रिकॉर्ड कर के डॉ० ऐ० पी० जे० अब्दुल कलाम जी के सामने प्रस्तुत किया था।

श्री जिया लाल ठाकुर एक किसान परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। इनके पास मंच नहीं था, इनका गांव कस्बों से दूर था, परन्तु ये करियाले से जुड़े रहे। ज़िला सोलन के क्यारद गांव के रहने वाले धनी राम तोमर जी के साथ भी इन्होने करियाला प्रस्तुत किया। वे हिमाचल के शिमला में रहने वाले प्रसिद्ध तबला वादक कश्मीरी लाल जी के ससुर थे। मास्टर धनी राम इन्हें अक्सर वैदिक तालों, देव तालों तथा लोक संगीत से संबंधित ज्ञान देते थे। तत्पश्चात इनकी संगीत शिक्षा चंडीगढ़ के देव समाज कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत श्री नारायण राठौर जी से हुई, श्री नारायण राठौर ने इन्हें हारमोनियम वादन, गायन तथा ताल सीखने हेतु प्रोत्साहित किया। फिर इनकी गंडा बंधाई जयपुर के सारंगी वादक तथा पदम् विभूषण से सम्मानित उस्ताद मोइनुद्दीन ख़ाँ साहब से हुई।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

करियाला विधा के साथ भी जियालाल ठाकुर जी का गहरा सम्बन्ध रहा है। जिया लाल जी का कहना है कि "करियाला विधा में गंभीर ध्वनियों के वाद्य यंत्र प्रयुक्त होते हैं जो वैदिक कलाओं के मूल तत्वों के साथ प्रयोग में लाये जाते हैं। डंके की शैली के अंतर्गत इन में जितने भी ताल बजते हैं वो छंदों पर आधारित हैं। इन तालों में प्रमुख हैं 32 मात्रा की जंग ताल (देव घनाक्षरी छंद का ताल जिसमें एक आवर्तन में आठ डंके), 24 मात्रा की ताल (गायत्री छंद की ताल) एक आवर्तन में आठ डंके, 16 मात्रा की नाटी ताल मालिनी छंद की ताल), एक आवर्तन में 4 डंके, 14 मात्रा की दीपचंद ताल (डंके की शैली में 2 डंके), इन्द्रवज्रा छन्द के अंतर्गत 12 मात्रा की ताल, माला नाटी या ढीली नाटी उपेन्द्रवज्रा छन्द की ताल, 10 मात्रा की झूलना छन्द की ताल, 8 मात्रा की कहरवा अनुष्टुप छन्द की ताल है, 7 मात्रा की रूपक ताल गीतांगी छन्द की ताल है जिसमें एक ही आवर्तन में एक ही डंका लगता है, 6 मात्रा की दादरा ताल भड़ोवा छंद की ताल है। इन्होने छंदों पर आधारित वैदिक शैली के तालों पर शोध किया है और उस शोध पर आधारित प्रमाणित तथ्यों का संग्रह कर के इन की एक पुस्तक भी प्रकाशित होने वाली है। जिया लाल जी की पुस्तक का नाम "विरासती संस्कृति का डंका" है, जिसमें हिमाचल की परम्परागत लोक रचनायें भी स्वरलिपिबद्ध रूप से देखने को मिलेंगी।" जियालाल ठाकुर जी ने वैदिक शैली की तालों पर किये अपने शोध में भी बताया है कि हमारी संस्कृति में प्रयुक्त बहुत सी तालें वैदिक संस्कृति की तालें हैं, जिनका संरक्षण व संवर्धन अनिवार्य है। इन्होने अपने शोध कार्य में बताया है कि ताल को रिकॉर्ड करने के लिए जो क्लिक होता है वो वैदिक शैली से ही लिया गया है। झपताल को यदि डंके की शैली में बजाया जाएगा तो उस में एक आवर्तन में 2 ही डंके आएंगे। वैदिक संस्कृति की तालों से संबंधित जियालाल ठाकुर समय-समय पर सेमिनार तथा कार्यशालाओं का आयोजन भी करवाते हैं।

जिया लाल जी का कहना है कि "हमारी संस्था विरासती संस्कृति की शिक्षा स्कूलों में कुछ समय में देने वाली है। मैंने सरकार से इस के लिए अनुमति भी ले ली है। मैंने 15 लोगों की टीम तैयार कर दी है , जो एक हफ्ते में 12 स्कूलों में प्रशिक्षण देंगे। प्राथमिक स्तर के बच्चों से शुरू कर के जमा 2 कक्षा तक के बच्चों को हम इस संस्था के माध्यम से वैदिक वाद्यों और तालों के साथ राष्ट्रीय गीत एवं राष्ट्रीय गान सिखाएंगे। साथ ही देव धनाक्षरी छन्द तथा गायत्री छन्द के ताल में वेद मन्त्र गान भी करवाएंगे। इन के साथ-साथ विरासती संस्कृति के अंतर्गत 16 संस्कारों के गीत सुनाएंगे।"

शास्त्रीय संगीत तथा संवेदना के मध्य सम्बन्ध बताते हुए श्री जियालाल ठाकुर कहते हैं कि "जब कोई सांगीतिक ध्वनि हमारे कानों से सुनते हुए दिल और दिमाग को छू कर आँखों के रास्ते से पानी निकालती है तो उसे संवेदना कहते हैं। हम कह देते हैं कि वाह यार! क्या जगह ली हैं, क्या स्वर लगाया है , क्या थममसपदह के साथ उस शब्द को बोला है। वो संवेदना शास्त्रीय संगीत में है, परन्तु आज के संगीत में वो संवेदना ख़त्म होती जा रही है। हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के आयोजन बहुत ही कम होते हैं। यहाँ शास्त्रीय संगीत को विकसित करने वाले स्रोत ख़त्म होता जा रहे हैं। आज के समय में संगीत की संवेदना का दूसरा नाम व्यवसाय हो गया है। आज के समय में जन मानस में शास्त्रीय संगीत के प्रति अधिक संवेदना नहीं है।"

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय सगीत के प्रचार व प्रसार हेतु जिया लाल जी का कहना है कि "शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत आने वाली वैदिक संस्कृति का गर्भ हिमालय पुत्र हिमाचल प्रदेश है, जिसका मुख्य केंद किन्नौर है तथा देव दोष के डर से आज भी वैदिक संस्कृति हिमाचल प्रदेश में बची हुई है। चाहे पाश्चात्यीकरण जितना मर्ज़ी हो गया हो लेकिन ढोल एवं नगाड़ों का इस्तेमाल करना ही पड़ता है। यहां के पवित्र पर्वों में जो देव क्रीड़ाएं एवं देव कार्य होते हैं जैसे बरलाज या

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

ठोडा। ये सभी गंभीर ध्वनि वाले वाद्यों के वादन के बिना सम्पूर्ण होते ही नहीं हैं। वैदिक संस्कृति को भी शिक्षा प्रणाली में डाला जाए जिसमें सरकार को मनाने के लिए संगीत से जुड़े लोग भी प्रयास करें। मेरे हिमाचल के युवा वर्ग से अनुरोध है कि हमारे पूर्वजों द्वारा हमें धरोहर के रूप में दी हुई इन विधाओं को हम बचा कर रखें अन्यथा शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत तथा इससे संबंधित अन्य विधाएँ लुप्त हो जाएंगीं।

03 डॉ० ओम प्रकाश चैहान

56 वर्षीय डॉ ० ओम प्रकाश चैहान का जन्म ज़िला शिमला के शोघी में हुआ। यह बात कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए कि इनका संगीत के साथ खून का रिश्ता है। इन के नाना जी 'मास्टर सुख राम' उच्च कोटि के तबला वादक तथा गायक थे। वह राजा-महाराजाओं के दरबार में अपनी प्रस्तुतियां दिया करते थे। ये कलकत्ता में अपने परिवार के साथ रहते थे। कुछ समय पश्चात इन के पिता जी शोघी आ कर बस गए थे तथा उन्होंने यहाँ पर राजा महाराजाओं द्वारा दी गई ज़मीन पर अपना मकान बना दिया। उससे पहले वे जंग रियासत, कोटी रियासत आदि में दरबारी संगीतज्ञ थे। संगीत से जुड़ने हेतु अपने नाना जी से भी डॉ० ओम प्रकाश चैहान जी को प्रेरणा मिली। इन के बड़े भाई तथा माता जी को भी गाने शौक का था तथा छोटी बहन ने संगीत में पी० एच० डी० की है, उन्हें भी बचपन से ही गाने का बहुत शौक था।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा शोघी स्कूल में हुई। इसके पश्चात कोटशेरा कॉलेज , चैड़ा मैदान , शिमला से इन्होने बी०ए० की। सर्वप्रथम इन्होने प्रोफेसर सोमदत्त बट्टू जी के सान्निध्य में संगीत की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात ये एम०ए० करने हिमाचल प्रदेश विश्विद्यालय चले गए। वहां इन्होने सर्वप्रथम डॉ० चमन लाल वर्मा जी द्वारा संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। उन के पश्चात डॉ० मनोरम शर्मा जी तथा डॉ० भीम सेन शर्मा जी द्वारा इन्हें संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई। इन के द्वारा पढ़ाये गए बहुत से विद्यार्थी आज कॉलेजों में प्राध्यापक के पद पर पदासीन हो कर संगीत की शिक्षा दे रहे हैं।

वर्तमान में डॉ० ओम प्रकाश चैहान राजकीय महाविद्यालय सोलन में कार्यरत हैं। इससे पहले ये बहुत से कॉलेजों में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। जैसे ऊना कॉलेज, सावड़ा, संजौली कॉलेज, कोटशेरा कॉलेज, राजगढ़ कॉलेज आदि। इन्होने बहुत से युवा महोत्सवों हेतु बच्चों को शास्त्रीय गायन, वादन, समूह गान आदि हेतु तैयारी करवाई हैं जिनमे इन के शिष्यों ने अनेकों स्थान प्राप्त किए हैं। इन के अलावा ये शास्त्रीय संगीत का ज्ञान आम लोगों में भी बाँटते हैं। इन्होने अनेकों बार अपने महाविद्यालयों के बड़े कार्यक्रमों में संगीत गायन की प्रस्तुतियां भी दी हैं ताकि विद्यार्थियों के अलावा अन्य व्यक्ति भी शास्त्रीय संगीत को जान पाएं। ये विद्यार्थियों के लिए शास्त्रीय संगीत से सम्बंधित बहुत सी कार्यशालाओं तथा सेमिनारों का आयोजन भी करवाते रहते हैं।

शास्त्रीय संगीत की गुरु शिष्य परम्परा के बारे में इनका यह कहना कि "स्कूल तथा कॉलेजों में विद्यार्थियों को जो संगीत शिक्षा मिलती है वह पूर्ण रूप से संतोषजनक नहीं होती। मेरे सभी गुरु 'किराना घराना' से संबंधित हैं। मैं गुरु शिष्य परम्परा में भी इस ज्ञान को बच्चों में आगे बांट रहा हूँ। जो लोग घरानेदार पद्धति के अनुसार संगीत सीखते हैं वो लोग ही संगीत के क्षेत्र में एक अच्छा मुकाम हासिल कर सकते हैं।"

शास्त्रीय संगीत तथा संवेदना के मध्य सम्बन्ध बताते हुए डॉ० ओम प्रकाश चैहान कहते हैं कि "संवेदना का मतलब यही है कि हमारी भावनाएं संगीत के प्रति क्या कहना चाहती हैं। हमें अपने अंदर संगीत के प्रति रुझान अथवा नशा पैदा कर गुरुओं के चरणो में बैठ कर संगीत सीखना होता है ताकि उनकी भावनाएं तथा संवेदनाएं हमारे अंदर भी प्रवेश कर जाएं। वह भावनाएँ बहुत ही पवित्र तथा ईमानदार होती हैं। जो एक सच्चा संगीतकार होता है वो बहुत ही ईमानदार तथा मन

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

का भोला होता है। आम दुनिया और सच्चे संगीतकार में दिन रात का फर्क होता है क्योंकि वह बहुत ही संवेदनशील होता है तथा यही भाव व संवेदनाएं वो अपने शिष्यों में भी डालना चाहता है। साथ ही जो भी शिष्य गुरु से संगीत सीखते हैं वो भी संवेदनशील और भावनात्मक बन जाते हैं क्योंकि शास्त्रीय संगीत की गहराई को समझने के लिए पवित्रता को अपना कर गुरु के चरणों में बैठना पड़ता है।"

भारत की नई शिक्षा नीति के अंतर्गत संकाय खत्म कर दिए गए हैं और बच्चा अपनी रूचि के अनुसार विषय चुन सकता है, तो इस नीति के बारे में डॉ० ओम प्रकाश चैहान का कहना है कि "अगर नई शिक्षा नीति सच में ही लागू हो जाए तो बच्चों की संवेदनाओं को समझने का इससे अच्छा मौका कोई और नहीं हो सकता। इससे बच्चों की भावनाओं का पता चल जाएगा कि वो किस दिशा में जाना चाहते है। मैं तो बल्कि यह भी कहूंगा कि यदि पहली कक्षा में संगीत के 50 बच्चे हैं तो आगे चल कर वे 50 के 50 बच्चे संगीत विषय की तरफ आकर्षित हो जाएंगे। संगीत में वो आकर्षण, रंजकता तथा मिठास है जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। जो बच्चा 17 या 18 वर्ष की उम्र में संगीत सीखना प्रारम्भ करता है उन के लिए संगीत सीखना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। जो बच्चा बचपन से ही सही तरीके से स्वर लगाना सीख जाएगा तो आगे चल कर वह बहुत ही निखरा हुआ कलाकार बन कर उभरेगा।"

हिमाचल प्रदेश के जनमानस में शास्त्रीय संगीत के प्रति संवेदना बढ़ाने हेतु डॉ० ओम प्रकाश कहते हैं कि "हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में पूर्व प्रोफेसर इंद्राणी चक्रवर्ती, डॉ० मनोरमा शर्मा जी ने संगीत के सैद्धांतिक पक्ष पर बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं तथा डॉ० चमनलाल वर्मा जी ने भी शास्त्रीय संगीत से सम्बंधित बहुत से पुस्तकें लिखी हैं। साथ ही मेरे गुरु जी प्रोफेसर भीमसेन शर्मा जी ने भी काफी किताबें लिखी हैं। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में जितनी भी रचनाएं बनाई हैं उन्हें किताबों के माध्यम से जन मानस के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'गुरु रंग' के नाम से उन्होंने बहुत सी बंदिशें भी रची हैं। मैं यही कहूंगा कि हम सभी इस संगीत शिक्षा को ज़िंदा रखें। हिमाचल के लोगों में शास्त्रीय संगीत की ओर रुझान इस लिए भी कम है क्योंकि आज के समय में हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत गाने या बजाने वाले बहुत ही कम लोग है। क्योंकि दौर ही ऐसा आ गया है कि आज व्यक्ति गीत, ग़ज़ल, भजन, लोक संगीत तथा पाश्चात्य संगीत की तरफ ज़्यादा आकर्षित हो रहे हैं। अपने लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत को सजीव रखना हम सब का परम कर्तव्य है। सरकार से भी मेरा यह अनुरोध है कि यह खाली फिल्मी संगीत या पाश्चात्य संगीत बन कर न रह जाए अपितु शास्त्रीय संगीत ज़िंदा रह जाए।"

04 **परविंदर सिंह नामधारी**

48 वर्षीय परविंदर सिंह नामधारी हिमाचल प्रदेश के ज़िला सोलन में स्थित घट्टी नामक गाँव में रहते हैं। इनके बचपन से ही परिवार में संगीत का माहौल था। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इन्हें संगीत विरासत में मिला। इन्होंने 3 साल की उम्र से गाना शुरू कर दिया था। इन्हें बचपन से ही गायकी का शौक रहा है। इन के पिता जी सरदार गुलाब सिंह जी जब भी कहीं किसी कार्यक्रम में गायन प्रस्तुति देने जाते थे जो इन्हें भी साथ लेकर जाते थे। परविंदर सिंह नामधारी सिख समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। पंजाब के भैणी साहब गुरूद्वारे को ये अपना गुरु घर मानते हैं। भैणी साहब में रहने वाले संत जगजीत सिंह जी के कारण इन्हें शास्त्रीय संगीत सीखने की प्रेरणा मिली। भैणी साहब गुरूद्वारे में इन्हें कुछ समय के लिए पं० राजन-साजन मिश्र जी से भी शास्त्रीय संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। उसके बाद राजकीय विद्यालय सोलन में इनकी पढाई शुरू हुई। गुरुद्वारों में शिक्षा प्राप्त करने की वजह से परविंदर तबला एवं ढोलक भी बजा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

लेते थे। स्कूल के समय में ही इन्होने अपने पिता जी से कहा कि मैं शास्त्रीय संगीत विधिवत रूप से सीखना चाहता हूँ। उस समय सोलन में संगीत विद्वान पंडित नारायण दत्त जी शास्त्रीय संगीत सिखाते थे। जब इन के पिता इन्हें पंडित नारायण दत्त शर्मा जी के पास तबला सीखने हेतु ले गए तो पंडित जी ने परविंदर जी से पूछा कि 'क्या आप गाते भी हो?' तो परविंदर जी ने कहा "जी हाँ ! तथा उन के कहने पर परविंदर जी ने उन्हें एक भजन सुना दिया। तत्पश्चात परविंदर जी की गायकी से प्रभावित होकर पंडित नारायण दत्त जी ने परविंदर से कहा कि आप मूल रूप से गायकी को सीखिए। तत्पश्चात सन 1987 से सन 1997 तक इन्होने पंडित नारायण दत्त जी के पास शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इनके अलावा न्यूज़ीलैंड में अपनी शास्त्रीय संगीत अकादमी चला रहे पण्डित सुखदेव मधुर जी से भी इन्होने शास्त्रीय संगीत प्राप्त की। धीरे-धीरे परविंदर स्कूली कार्यक्रमों में भी भाग लेने लग गए। आगे चल कर टूर्नामेंटों तथा महाविद्यालय में युवा महोत्सवों में भी शास्त्रीय संगीत गायन की प्रस्तुतियां देने लगे। इन कार्यक्रमों में परविंदर जी राष्ट्रीय स्तर तक भी अपनी गायन प्रस्तुतियां दे चुके हैं। अभी तक श्री परविंदर सिंह देश के कई बड़े संगीत सम्मेलनों में शास्त्रीय संगीत गायन की प्रस्तुतियां दे चुके हैं, जिन में प्रमुख है हरिबल्लभ संगीत सम्मलेन। परविंदर सिंह संगीत में एम० फिल० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। महाविद्यालय में परविंदर जी ने श्री सुचेत सिंह मनकोटिया जी से तथा विश्वविद्यालय में डॉ० जीत राम शर्मा जी से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

सन 1996 में कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर सर्वप्रथम डी० ए० वी० दाड़लाघाट में इन्होने संगीत तथा कला विषय पढ़ना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात डी० ए० वी० कुमारहट्टी , सोलन में अध्यापन करने लगे। 2006 तक परविंदर जी डी० ए० वी० के साथ जुड़े रहे, तत्पश्चात एम० आर० ए० डी० ए० वी० स्कूल शामती, सोलन में भी अध्यापन कार्य किया। शामती के बाद इन्होने सोलन के नौणी में स्थित चेन्नई विद्यालय में भी पढ़ाया। सन 2006 में इन्हें पता चला कि बड़ू साहिब, सिरमौर के स्कूल में संगीत प्राध्यापक का पद रिक्त था। तत्पश्चात इन्होंने वहां स्कूल में अध्यापन कार्य करना शुरू किया। वहां पर ये प्रयाग संगीत समिति के अंतर्गत गुरमत संगीत में संगीत प्रवीण तक की उपाधि हेतु परीक्षाएं करवाते थे। एक वर्ष में इन्हें पदोन्नत कर के Akal Devine College Of Music And Spiritualism में पढ़ाने का मौक़ा मिल गया। वहाँ इन्होने प्रोफेसर के पद पर अध्यापन कार्य किया। कुछ समय पश्चात ये वहां उप प्रधानाचार्य बने। वहां पर भी परविंदर बी० ए० तथा एम० ए० , एम० फिल० तथा पी० एच० डी० की कक्षाओं को मुख्य तौर पर गुरमत संगीत तथा शास्त्रीय संगीत सिखाते थे। वहाँ पर इन्हें 4 वर्षों की एक परियोजना गई। जिसके अंतर्गत इन्होने विद्यार्थियों को 62 रागों पर आधारित गुरमत संगीत का शिक्षण दिया। क्योंकि परविंदर स्वयं भी दिलरुबा साज बजाते हैं तो इन्होने तंत्री वाद्यों पर इन सभी रागों पर आधारित गुरु वाणियों को प्रतिस्पर्धा हेतु बच्चों को तैयार करवाया जिसका प्रसारण PTC पंजाबी नामक टीवी चैनल पर भी होता था। इसके साथ ही परविंदर शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यशालाओं में अपने विद्यार्थियों को देश भर में ले जाते रहे हैं। बड़ू साहिब में इनकी गुरुमत संगीत से संबंधित एक किताब भी छपी जिस में लगभग 80 प्रतिशत से अधिक परविंदर जी द्वारा बनाई गई रचनाओं का समावेश था। इन्होने लगभग 10 साल बड़ू साहिब में अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात इन्होने सोलन आ कर अपनी निजी संगीत अकादमी खोल दी जो अभी तक सुचारू रूप से चल रही है।

वर्तमान में श्री परविंदर सिंह जी के पास लगभग 45 से 50 बच्चे शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत तथा गुरुमत संगीत सीखने हेतु आते हैं। इन के अलावा बाहरी देशों से भी कई लोग इन से गुरुमत संगीत विधिवत रूप से रूप से सीखते हैं। वर्तमान में इन के पास बी०ए०, एम०ए०, एम०फिल० तथा पी०एच०डी० तक के विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत सीखने हेतु

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

आते हैं। जब कोई नया विद्यार्थी इन से शास्त्रीय संगीत सीखने के लिए आता है तो ये उसके अंदर सर्वप्रथम संगीत के प्रति उसकी संवेदना को जानने का प्रयास करते। फिर जब वह धीरे-धीरे शास्त्रीय संगीत को समझना शुरू करता है तो परविंदर सिंह जी उस की समझ को और अधिक बढ़ाने को कोशिश करते हैं। सर्वप्रथम बच्चों को बैठने की सही मुद्रा, सांस का कार्य तथा सही रूप से स्वर लगाव सिखाते हैं। तत्पश्चात पल्टे, अलंकार तथा स्वरों को सजाना सिखाते हैं। जैसे किसी स्त्री को सजाने के लिए अलग-अलग आभूषण लगते हैं उस ही प्रकार स्वरों को सजाने के लिए भी आभूषण प्रयुक्त होते हैं। जैसे कण, मींड, खटका, मुर्की, आलाप लगाना, वादी-सम्वादी, न्यास आदि। इन के शिष्य अनेक प्रकार के युवा कार्यक्रमों में ज़िला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर तक भी अपनी प्रस्तुतियां दे चुके हैं। अपनी अकादमी में परविंदर जी गायन से साथ-साथ दिलरुबा, तबला तथा हारमोनियम भी सिखाते हैं।

श्री परविंदर सिंह जी का यह मानना है कि शास्त्रीय संगीत केवल स्कूल तक न रहे बल्कि आम जन मानस भी शास्त्रीय संगीत के प्रति जागृत हों। परविंदर सिंह जी शूलिनी महाविद्यालय सोलन में भी शास्त्रीय संगीत से संबंधित कार्यशाला कर चुके हैं। ये प्रत्येक रविवार सोलन के मुख्य बाज़ार में स्थित गुरूद्वारे में शब्द गायन करते हैं तथा गायन से पूर्व राग का नाम ज़रूर बताते हैं। इनकी यही कोशिश रहती है कि शास्त्रीय संगीत को आम लोग भी समझें। परविंदर जी गुरूद्वारे में ज़्यादा तैयारी न दिखाते हुए साधारण रूप से गायन सुनाते हैं क्योंकि सभी लोग शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता नहीं होते।

गुरुमत संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के मध्य सम्बन्ध बताते हुए श्री परविंदर सिंह जी कहते हैं कि "गुरुमत संगीत में हम शब्द गुरुवाणी को प्रधानता देते हैं। उस में राग को थोड़ा कम दर्ज़ा दिया जाता है। लेकिन शास्त्रीय संगीत की लगभग सभी प्रचलित तालें इस संगीत में प्रयुक्त होती हैं, परन्तु रागों में थोड़ा अंतर है। जैसे शुरुवात में श्री राग, बड़हँस राग, सुखारी, रामकली,धनाश्री, देसी जैसे 31 प्रकार के राग प्रयुक्त होते हैं तथा मिश्रित रागों को मिला कर गुरुमत संगीत में 62 राग प्रयुक्त होते हैं। "

ग़ैर सरकारी स्कूलों में परविंदर सिंह ने बहुत वर्षों तक संगीत विषय पढ़ाया है। लेकिन वे इन स्कूलों में संगीत की स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं, क्योंकि न तो इन स्कूलों में पर्याप्त रूप से साधन तथा वाद्य उपलब्ध थे, साथ ही संगीत को विषय के रूप में न होकर अतिरिक्त गतिविधियों के रूप में समझा जाता था। बहुत से स्कूलों में प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों की संगीत विषय की मात्र एक ही कक्षा होती थी। न ही इन स्कूलों में शास्त्रीय संगीत से संबंधित विद्यार्थियों के लिए कार्यशालाओं या सेमिनारों का आयोजन होता था।

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के उत्थान हेतु परविंदर सिंह नामधारी के सुझाव हैं कि "यदि बच्चा बचपन से ही संगीत विषय चुने तो आगे चल कर वह अच्छा कलाकार बनेगा, संगीत विषय का पाठ्यक्रम बच्चे की रूचि के अनुकूल हो। स्कूलों में संगीत का अलग से एक अध्यापक हो, यह न हो कि पी०टी०आई० या डी०पी० संगीत सिखाएं। संगीत के अध्यापकों को इनकी क्षमता, ज्ञान तथा योग्यता के आधार पर नियुक्त किया जाए। उदाहरणार्थ जो व्यक्ति डिप्लोमा कर रहे हैं उन्हें स्कूल में छोटी कक्षाओं को पढ़ाने हेतु नियुक्त कर दिया जाए, जो एम०ए० या एम०फिल० कर लेते हैं उन्हें 12 तक की कक्षाएं दे दी जाएं तथा जो पी०एच०डी० करते हैं उन्हें महाविद्यालय में नियुक्त किया जाए। साथ ही जो इनसे भी अधिक निपुण हों उन्हें विश्वविद्यालय में नियुक्त कर दिया जाए। सर्वप्रथम हम संगीत से जुड़े लोगों का यह प्रयास होना चाहिए कि हम आम जनमानस को शास्त्रीय संगीत से जोड़ें। जब बच्चे सीखेंगे तो उन के घर वाले भी संगीतमें रूचि लेने लगेंगे।"

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश का ज़िला सोलन अपने स्थानीय उत्सवों-त्योहारों और अटूट संस्कृति के लिए भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। संगीत का इस ज़िले से अटूट नाता रहा है। आज़ादी से पूर्व यहाँ पर संगीत मात्र राज घरानों तक ही सीमित था। परन्तु भारत के आज़ाद हो जाने तथा रियासतों का विलय हो जाने के उपरांत हिमाचल प्रदेश में रेडियो नामक क्रांति आयी तथा संगीत आम जान मानस तक भी पहुँचने लगा। आज हिमाचल प्रदेश का सोलन इलाका शास्त्रीय संगीत के प्रचार व प्रसार में अपनी भूमिका तो निभा रहा है, परन्तु यह सवाल भी अनायास ही उठ आता है कि क्या शास्त्रीय संगीत के प्रचार व प्रसार के लिए सोलन क्षेत्र में हो रहे प्रयास काफी हैं भी या नहीं। यहाँ शास्त्रीय संगीत से सम्बंधित बहुत ही कम कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जिस कारण यहाँ की आम जनता का इस ओर रुझान कम है । सरकार का भी यह पूर्ण दायित्व बनता है कि वह हमारी भारतीय संस्कृति की इस अमूल्य निधि के उत्थान हेतु भरसक प्रयास करे अन्यथा शास्त्रीय संगीत नामक यह विधा लुप्त हो जाएगी ।

संदर्भ सूची

1 पुरोहित गुंजाल, नई कविता: संवेदना और शिल्प , पृष्ठ - 23
2 मुंजाल अंजू मुंजाल, संगीत मंजूषा , पृष्ठ - 14
3 वर्मा राम चंद्र , मानक हिंदी कोष , पृष्ठ - 237
4 भाटिया हंसराज, सामान्य मनोविज्ञान , पृष्ठ - 254
5 श्रीवास्तव हरीश चंद्र श्रीवास्तव , राग परिचय भाग -1 , पृष्ठ 119 -120

साक्षात्कार सूची

1 सीता राम शर्मा , दिनांक: 15 -11 -2019
2 जिया लाल ठाकुर , दिनांक: 06 -01 -2020
3 ओम प्रकाश चैहान , दिनांक: 13 -03 -2020
4 परविंदर सिंह नामधारी , दिनांक: 23 -08 -2020